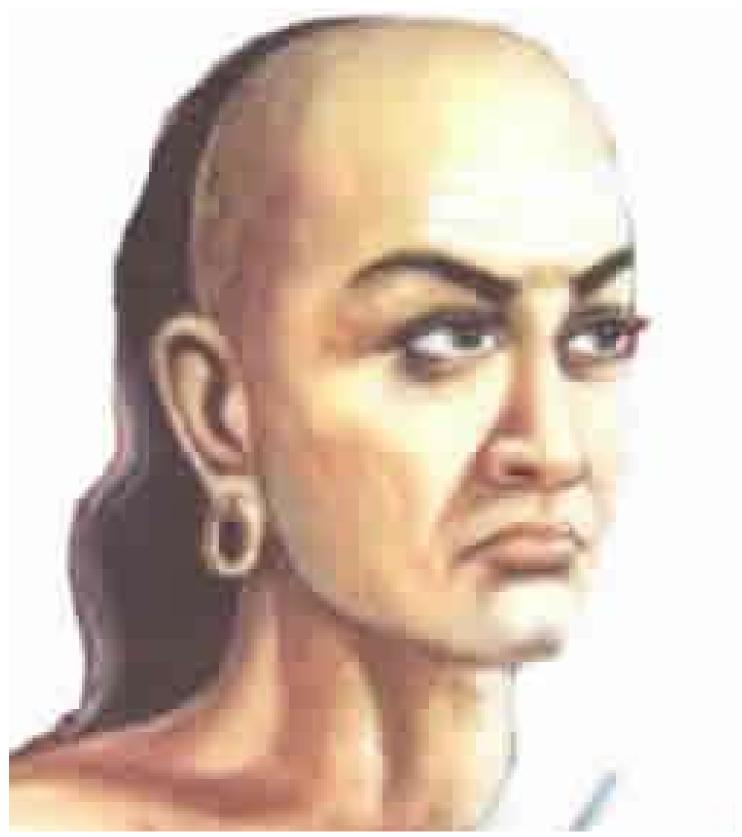
हिंदी साहित्य मार्गदर्शन

TRANSFORMING LIVES





***** >

चाणक्य नीति [हिंदी में] : तेरहवां अध्याय | Chanakya Neeti [In Hindi]: Thirteenth Chapter

▲ Nisheeth Ranjan ## 9:08 PM • 11 comments

चाणक्य नीति : तेरहवां अध्याय | Chanakya Neeti In Hindi: Thirteenth Chapter

यदि आदमी एक पल के लिए भी जिए तो भी उस पल को वह शुभ कर्म करने में खर्च करे. एक कल्प तक जी कर कोई लाभ नहीं. दोनों लोक इस लोक और पर-लोक में तकलीफ होती है.

A man may live but for a moment, but that moment should be spent in doing auspicious deeds. It is useless living even for a kalpa (4,320,000 *1000 years) and bringing only distress upon the two worlds (this world and the next).

हम उसके लिए ना पछताए जो बीत गया. हम भविष्य की चिंता भी ना करे. विवेक बुद्धि रखने वाले लोग केवल वर्तमान में जीते है.

We should not fret for what is past, nor should we be anxious about the future; men of discernment deal only with the present moment.

यह देवताओ का, संत जनों का और पालको का स्वभाव है की वे जल्दी प्रसन्न हो जाते है. निकट के और दूर के रिश्तेदार तब प्रसन्न होते है जब उनका आदर सम्मान किया जाए. उनके नहाने का, खाने पिने का प्रबंध किया जाए. पंडित जन जब उन्हें अध्यात्मिक सन्देश का मौका दिया जाता है तो प्रसन्न होते है.

It certainly is nature of the demigods, men of good character, and parents to be easily pleased. Near and distant relatives are pleased when they are hospitably received with bathing, food, and drink; and pandits are pleased with an opportunity for giving spiritual discourse.

जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तो यह पाच बाते तय हो जाती है...

१. कितनी लम्बी उम्र होगी. २. वह क्या करेगा ३. और ४. कितना धन और ज्ञान अर्जित करेगा. ५. मौत कब होगी.

Even as the unborn babe is in the womb of his mother, these five are fixed as his life destiny: his

life span, his activities, his acquisition of wealth and knowledge, and his time of death.

देखिये क्या आश्चर्य है? बड़े लोग अनोखी बाते करते है. वे पैसे को तो तिनके की तरह मामूली समझते है लेकिन जब वे उसे प्राप्त करते है तो उसके भार से और विनम्र होकर झुक जाते है.

O see what a wonder it is! The doings of the great are strange: they treat wealth as light as a straw, yet, when they obtain it, they bend under its weight.

जो व्यक्ति अपने घर के लोगो से बहोत आसक्ति रखता है वह भय और दुःख को पाता है. आसक्ति ही दुःख का मूल है. जिसे सुखी होना है उसे आसक्ति छोडनी पड़ेगी.

He who is overly attached to his family members experiences fear and sorrow, for the root of all grief is attachment. Thus one should discard attachment to be happy.

जो भविष्य के लिए तैयार है और जो किसी भी परिस्थिति को चतुराई से निपटता है. ये दोनों व्यक्ति सुखी है. लेकिन जो आदमी सिर्फ नसीब के सहारे चलता है वह बर्बाद होता है.

He who is prepared for the future and he who deals cleverly with any situation that may arise are both happy; but the fatalistic man who wholly depends on luck is ruined.

यदि राजा पुण्यात्मा है तो प्रजा भी वैसी ही होती है. यदि राजा पापी है तो प्रजा भी पापी. यदि वह सामान्य है तो प्रजा सामान्य. प्रजा के सामने राजा का उद्हारण होता है. और वो उसका अनुसरण करती है.

If the king is virtuous, then the subjects are also virtuous. If the king is sinful, then the subjects also become sinful. If he is mediocre, then the subjects are mediocre. The subjects follow the example of the king. In short, as is the king so are the subjects.

मेरी नजरो में वह आदमी मृत है जो जीते जी धर्म का पालन नहीं करता. लेकिन जो धर्म पालन में अपने प्राण दे देता है वह मरने के बाद भी बेशक लम्बा जीता है.

I consider him who does not act religiously as dead though living, but he who dies acting religiously unquestionably lives long though he is dead.

जिस व्यक्ति ने न ही कोई ज्ञान संपादन किया, ना ही पैसा कमाया, मुक्ति के लिए जो आवश्यक है उसकी पूर्ति भी नहीं किया. वह एक निहायत बेकार जिंदगी जीता है जैसे के बकरी की गर्दन से झूलने वाले स्तन.

He who has acquired neither virtue, wealth, satisfaction of desires nor salvation (dharma, artha, kama, moksa), lives an utterly useless life, like the "nipples" hanging from the neck of a goat.

जो नीच लोग होते है वो दुसरे की कीर्ति को देखकर जलते है. वो दुसरे के बारे में अपशब्द कहते है क्यों की उनकी कुछ करने की औकात नहीं है. The hearts of base men burn before the fire of other's fame, and they slander them being themselves unable to rise to such a high position.

यदि विषय बहुत प्रिय है तो वो बंधन में डालते है. विषय सुख की अनासक्ति से मुक्ति की और गति होती है. इसीलिए मुक्ति या बंधन का मूल मन ही है.

Excessive attachment to sense pleasures leads to bondage, and detachment from sense pleasures leads to liberation; therefore it is the mind alone that is responsible for bondage or liberation.

जो आत्म स्वरुप का बोध होने से खुद को शारीर नहीं मानता, वह हरदम समाधी में ही रहता है भले ही उसका शरीर कही भी चला जाए.

He who sheds bodily identification by means of knowledge of the indwelling Supreme Self (Paramatma), will always be absorbed in meditative trance (samadhi) wherever his mind leads him.

किस को सब सुख प्राप्त हुए जिसकी कामना की. सब कुछ भगवान् के हाथ में है. इसलिए हमें संतोष में जीना होगा.

Who realises all the happiness he desires? Everything is in the hands of God. Therefore one should learn contentment.

जिस प्रकार एक गाय का बछड़ा, हजारो गायो में अपनी माँ के पीछे चलता है उसी तरह कर्म आदमी के पीछे चलते है.

As a calf follows its mother among a thousand cows, so the (good or bad) deeds of a man follow him.

जिस के काम करने में कोई व्यवस्था नहीं, उसे कोई सुख नहीं मिल सकता. लोगो के बीच या वन में. लोगो के मिलने से उसका ह्रदय जलता है और वन में तो कोई सुविधा होती ही नहीं.

He whose actions are disorganised has no happiness either in the midst of men or in a jungle -in the midst of men his heart burns by social contacts, and his helplessness burns him in the forest.

यदि आदमी उपकरण का सहारा ले तो गर्भजल से पानी निकाल सकता है. उसी तरह यदि विद्यार्थी अपने गुरु की सेवा करे तो गुरु के पास जो ज्ञान निधि है उसे प्राप्त करता है.

As the man who digs obtains underground water by use of a shovel, so the student attains the knowledge possessed by his preceptor through his service.

हमें अपने कर्म का फल मिलता है. हमारी बुद्धि पर इसके पहले हमने जो कर्म किये है उसका निशान है. इसीलिए जो बुद्धिमान लोग है वो सोच विचार कर कर्म करते है. Men reap the fruits of their deeds, and intellects bear the mark of deeds performed in previous lives; even so the wise act after due circumspection.

जिस व्यक्ति ने आपको अध्यात्मिक महत्ता का एक अक्षर भी पढाया उसकी पूजा करनी चाहिए. जो ऐसे गुरु का सम्मान नहीं करता वह सौ बार कुत्ते का जन्म लेता है. और आखिर चंडाल बनता है. चांडाल वह है जो कुत्ता खाता है.

Even the man who has taught the spiritual significance of just one letter ought to be worshiped. He who does not give reverence to such a guru is born as a dog a hundred times, and at last takes birth as a chandala (dog-eater).

जब युग का अंत हो जायेगा तो मेरु पर्वत डिग जाएगा. जब कल्प का अंत होगा तो सातों समुद्र का पानी विचलित हो जायगा. लेकिन साधू कभी भी अपने अध्यात्मिक मार्ग से नहीं डिगेगा.

At the end of the yuga, Mount Meru may be shaken; at the end of the kalpa, the waters of the seven oceans may be disturbed; but a sadhu will never swerve from the spiritual path.

इस धरती पर अन्न, जल और मीठे वचन ये असली रत्न है. मूर्खी को लगता है पत्थर के टुकड़े रत्न है.

There are three gems upon this earth; food, water, and pleasing words -- fools (mudhas) consider pieces of rocks as gems.

बारहवां अध्याय चौदहवां अध्याय

To read the translation of all the chapters of Chanakya Neeti In Hindi you can navigate to the following link which has the compilation of all the chapters in Hindi.

o सम्पूर्ण चाणक्य नीति [हिंदी में] | Complete Chanakya Neeti In Hindi

Note: Some thoughts of Chanakya may be offensive to women, or to Hindus born in so called low caste. I believe in complete equality between man and woman and we detest the Hindu caste system. We have decided to publish his thoughts exactly as written by Acharya Chanakya. We apologize to women, and to anyone else, who may be offended.

Tags: Chanakya Neeti Hindi, Hindi Chanakya Neeti, Kautilya Niti, Chanakya Hindi Quotes, Chanakya Quotes In Hindi, Chankya Wisdom Quotes, Hindi wisdom Quotes.

🗣 Categories: Chanakya Neeti 55 Chanakya Quotes 52 Great Quotations 140 Hindi Quotes 128 आचार्य चाणक्य 21 चाणक्य नीति 21 चाणक्य सूत्र 23

Next चाणक्य नीति। हिंदी में।: चौदहवां अध्याय।

जीवन पर महान व्यक्तियों के विचार | Hindi Quotes

Previous

Chanakya Neeti [In Hindi]:Fourteenth Chapter

(http://www.hindisahityadarpan.in/2011/12/chana(kytp://www.hindisahityadarpan.in/2011/12/hindineeti-hindi-chapter-14.html)

About Life

About Life

quotes-about-life.html)

POST A COMMENT

POST A	A COMMEN I	
← Reply	Alpana Jaiswal You are a very talented person,a pleasure to here. Thanks a lot for visiting my blog,an honor for me	12/17/2011 1:39 PM
Reply	ALKASHRYA go through	1/30/2012 11:11 AM
•	■ Nisheeth Ranjan Thank YOu!!!	7/04/2013 11:40 AM
Reply	♣ Nisheeth Ranjan Hi Alpana,Thanks a lot for your kind words and encouragement	4/11/2012 6:30 PM
Reply	Saurabh chaurasiya excelent	2/28/2013 10:27 AM
Reply	Saurabh chaurasiya excelent	2/28/2013 10:29 AM
•	▲ Nisheeth Ranjan Thanks youSaurabh	7/04/2013 11:40 AM
е	Shriram	3/17/2013 9:19 AM
Reply	bhut suder vichar jivan danya ho gya.	

7/04/2013 11:39 AM



आपकी टिप्पणियाँ एवं प्रतिक्रियाएँ हमारा उत्साह बढाती हैं और हमें बेहतर होने में मदद करती हैं !! अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें बेझिझक दें !!

© Emoticon

